Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

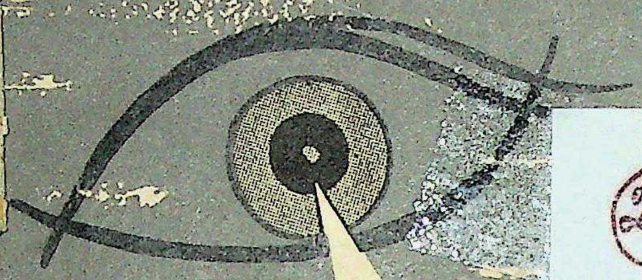

आत्मा की आँखें

दिनकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि
न लगायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R
84.61
DIN-A
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
64304

पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या .... आगत संख्या............

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३० वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मा की आँखें

04304

रामधारी सिंह दिनकर

पुस्तकालय
पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

पं० विद्याधर विद्यालंकार
स्मृति संग्रह

R84.01,DIN-A
04304

उदयाचल
कुल्हड़िया हाउस
अशोक राजपथ, पटना-४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक : उदयाचल
कुल्हड़िया हाउस
अशोक राजपथ, पटना - ४

V
९५२

प्रथम संस्करण १९६४ ई०
(सभी स्वत्व लेखक के अधीन)
मूल्य चार रुपये मात्र

मुद्रक :
जनवाणी प्रिण्टर्स एण्ड पब्लिशर्स प्राइवेट लि०
१७८, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता—३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

एक मज़ेदार किस्सा है जो सुनने लायक है।

कई वर्ष पहले की बात है, एक बार, शौक में आकर, मैंने कुछ विदेशी कविताओं के अनुवाद कर डाले और, जैसी मेरी आदत है, मूल के जो विम्ब, विचार या मुहाविरे हिन्दी में नहीं खप सकते थे, उन्हें छोड़कर मैंने उन्हीं के जोड़ के नये विम्ब, विचार या मुहाविरे हिन्दी में गढ़ दिये। नतीजा यह हुआ कि अनेक मित्रों ने कहा, "सीपी और शंख" की कविताएँ अनुवाद नहीं, हिन्दी की मौलिक रचनाएँ हैं।

मगर, किस्सा यहीं खत्म नहीं होता। बात यह है कि इधर दो-एक साल से रूस में मेरी कविताओं के रूसी अनुवाद तैयार करने की कुछ थोड़ी कोशिश की जा रही है। मास्को से रूसी भाषा में साहित्य की एक त्रैमासिक पत्रिका निकलती है जिसमें विदेशी भाषाओं के अनुवाद छापे जाते हैं। पिछले साल रूस से एक विदुषी महिला मेरे साहित्य पर शोध करने को भारत पधारीं। उन्होंने उक्त त्रैमासिक का वह अंक मुझे दिखाया जिसमें मेरी दस कविताओं के रूसी अनुवाद छपे थे। मैंने श्रीमती स्वेतलाना से कहा कि रूसी अनुवाद का अर्थ आप मुझे समझा दीजिये जिससे मैं समझ सकूँ कि आपके कवियों ने मेरी कौन-कौन कविताएँ अनुवाद के लिए चुनी हैं। स्वेतलानाजी ने सभी कविताओं का अर्थ मुझे समझाया, लेकिन यह देख कर मैं चकित रह गया कि मेरी दस कविताओं में से चार-पाँच वे थीं जो "सीपी और शंख" में संगृहीत हैं।

मैंने श्रीमती स्वेतलाना से कहा कि "सीपी और शंख" तो खुद अनूदित रचनाओं का संग्रह है, फिर आप लोगों ने उस संग्रह में से कविताएँ क्यों चुनीं? वे बोलीं, हम लोग जानते हैं कि "सीपी और शंख" की कविताएँ अनूदित रचनाएँ हैं और कौन कविता किस कवि की कविता पर से बनी है, इसकी सूची भी "सीपी और शंख" में दे दी गयी है। हमारे देश के कवियों ने "सीपी और शंख" से ली हुई कविताओं को मूल अंगरेजी, फ्रेंच, जर्मन, स्पैनिश या चीनी कविताओं से मिलाकर देखा भी। मगर, उनकी राय यह हुई कि "सीपी और शंख" की कविताएँ मूल से केवल प्रेरणा लेकर चली हैं, बाकी वे, सब-की-सब, दिनकरजी की अपनी कल्पना से तैयार हुई हैं। इसलिए, हम अगर उन्हें मौलिक रचनाएँ मान कर चलें तो इसमें कोई दोष नहीं है। इस तरह, उन्होंने "सीपी और शंख" की भी कई रचनाओं को मौलिक कृतियाँ मानकर रूसी में उनका अनुवाद कर डाला और ये अनुवाद काफी पसन्द भी किये गये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे थोड़ी हँसी तो जरूर आयी, मगर, मैंने स्वेतलानाजी से निवेदन किया कि रूसी में मेरा कोई संग्रह छपे तो उसमें "सीपी और शंख" की कविताओं के अनुवाद न रखे जायें, यही अच्छा होगा।

वर्त्तमान संग्रह "आत्मा की आँखें" भी मेरी मौलिक कृतियों का संकलन नहीं है। इनमें से प्रत्येक कविता अंगरेजी के कवि स्वर्गीय डी० एच० लारेन्स की किसी कविता को देखकर गढ़ी गयी है। और यहाँ भी तरीका मैंने वही अख्तियार किया है जिसका प्रयोग "सीपी और शंख" में किया गया था।

इन सभी कविताओं की भाषा बुनियादी हिन्दी है। लारेन्स की जिन कविताओं पर से ये कविताएँ तैयार हुई हैं उनकी भाषा भी मुझे बुनियादी अंगरेजी के समान दिखायी पड़ी--सरल, मुहाविरेदार, चलतू और पुरजोर जिसमें बनावट का नाम भी नहीं है।

कविताओं की भाषा गढ़ने के लिए लारेन्स छेनी और हथौड़ी का प्रयोग नहीं करते थे। जैसे जिन्दगी वे उसे मानते थे जो हमारी सभ्यतावाली पोशाक के भीतर बहती है, उसी तरह, भाषा उन्हें वह पसन्द थी जो बोलचाल से उछल कर कलम पर आ बैठती है। बुद्धि को वे बराबर शंका से देखते रहे और कला में पच्चीकारी का काम उन्हें नापसन्द था। उनकी एक सूक्ति मिलती है, Remember, skilled poetry is dead in fifty years। मगर, यह तो साहित्यिक विवाद का विषय है। उसमें पड़ने का यहाँ कोई प्रसंग नहीं है।

"आत्मा की आँखें" में ज्यादातर ऐसी कविताएँ हैं जो यूरोप और अमेरिका में बहुत लोकप्रिय नहीं हो सकीं। किन्तु, मैंने खास कर उन्हीं को इस कारण चुना है कि वे भारतीय चेतना के काफी आस-पास चक्कर काटती हैं।

पटना
४ जनवरी, १९६४ ई.

रामधारी सिंह दिनकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

शीर्षक		पृष्ठ संख्या
१. प्रार्थना	..	१
२. एकान्त	..	२
३. अकेलापन का आनन्द	..	३
४. उखड़े हुए लोग	..	४
५. देवता हैं नहीं	..	६
६. रहस्यवाद	..	९
७. महल-अटारी	..	११
८. गहराई में जाओ	..	१२
९. शैतान का पतन	..	१५
१०. ईश्वर की देह	..	१७
११. निराकार ईश्वर	..	१९
१२. पहले तन या मन ?	..	२०
१३. पुराने ज़माने के मर्द	..	२२
१४. मृत्यु का गीत	..	२४
१५. रचना	..	२६
१६. शिखा	..	२७
१७. भावी धर्म	..	२८
१८. सूर्यधन	..	३०
१९. पूर्ण जीवन	..	३१
२०. विचार	..	३२
२१. दो तरह के लोग	..	३४
२२. चार तत्त्व	..	३५
२३. पाप	..	३६
२४. क्लान्ति	..	३८
२५. विनम्रता	..	३९
२६. प्राचीन ज्ञान	..	४१
२७. आत्मा और क्रान्ति	..	४२
२८. जहर	..	४३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीर्षक		पृष्ठ संख्या
२९.	जिन्दगी की साँस	४४
३०.	बेखुदी	४५
३१.	सत्य का ज्ञान	४६
३२.	भविष्य के संकेत	४७
३३.	भविष्य का युद्ध	४९
३४.	आदमी	५०
३५.	दुखी आत्मा	५१
३६.	हुक्म	५२
३७.	नौकरी	५३
३८.	जगना और सोना	५४
३९.	पैगम्बर	५६
४०.	बीमारी का इलाज	५७
४१.	मौज-मजे का इन्किलाब	५९
४२.	वर्ग और जनता	६२
४३.	बुर्जुआ	६४
४४.	बुर्जुआ और बालशेविक	६७
४५.	दकियानूस	६८
४६.	मच्छर	६९
४७.	कोई क्रान्ति शुरू करो	७०
४८.	भावी राज्य	७१
४९.	काम	७३
५०.	जीवन के माध्यम	७६
५१.	मध्यम वर्ग	७८
५२.	रुपये का पागलपन	८०
५३.	सरकार और मजदूर	८४
५४.	मशीन की कामयाबी	८६
५५.	हाथ की कारीगरी	९१
५६.	पाप से भागो	९३
५७.	विनाश	९६
५८.	चूज़ा	९७
५९.	झाँकी	९८
६०.	मुहब्बत की खोज	९९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीर्षक		पृष्ठ संख्या
६१.	असबाब	१००
६२.	अश्लीलता	१०१
६३.	केवल इतना	१०२
६४.	सेक्स और विश्वास	१०३
६५.	प्रेम के बारे में झूठी बातें	१०४
६६.	मुझसे भी कहा था	१०६
६७.	व्यक्तित्व	१०९
६८.	खास दोस्त	१११
६९.	हँसो और बोलो	११३
७०.	नहीं मिस्टर लारेन्स, नहीं	११४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रार्थना

मेरे पाँव के पास चाँदनी बिछाओ भगवान!
दूज के चाँद पर मुझे खड़ा करो
किसी महाराजा के समान।

टखने डूबे हों चाँदनी में,
मेरे मोजे मुलायम, चमकदार हों;
और मेरे मस्तक पर
चाँदनी की झरती फुहार हो।

शीतलता पर इतराऊँ, चमक पर मचलूँ,
चाँदनी में तैरता हुआ मंज़िल की ओर चलूँ।

क्योंकि सूरज काल हो गया है।
उसका चेहरा शेर के समान लाल हो गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकान्त

लोग अकेलेपन की शिकायत करते हैं।
मैं समझ नहीं पाता,
वे किस बात से डरते हैं।

अकेलापन तो जीवन का चरम आनन्द है।
जो है निःसंग,
सोचो तो, वही स्वच्छन्द है।

अकेला होने पर जगते हैं विचार;
ऊपर आती है उठ कर
अंधकार से नीली झंकार।

जो है अकेला,
करता है अपना छोटा-मोटा काम,
या लेता हुआ आराम,
झाँक कर देखता है आगे की राह को,
पहुँच से बाहर की दुनिया अथाह को।

तत्त्वों के केन्द्र-बिन्दु से हो कर एकतान
बिना किसी बाधा के करता है ध्यान
विषम के बीच छिपे सम का,
अपने उद्गम का।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकेलेपन का आनन्द

अकेलेपन से बढ़ कर
आनन्द नहीं, आराम नहीं।
स्वर्ग है वह एकान्त,
जहाँ शोर नहीं, धूमधाम नहीं।

देश और काल के प्रसार में,
शून्यता, अशब्दता अपार में
चाँद जब घूमता है, कौन सुख पाता है?
भेद यह मेरी समझ में तब आता है,
होता हूँ जब मैं अपने भीतर के प्रान्त में,
भीड़ से दूर किसी निभृत, एकान्त में।

और तभी समझ यह पाता हूँ,
पेड़ झूमता है किस मोद में
खड़ा हुआ एकाकी पर्वत की गोद में।

बहता पवन मन्द-मन्द है।
पत्तों के हिलने में छन्द है।
कितना आनन्द है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उखड़े हुए लोग

अकेलेपन से जो लोग दुखी हैं,
वृत्तियाँ उनकी,
निश्चय ही, बहिर्मुखी हैं।

सृष्टि से बाँधने वाला तार
उनका टूट गया है;
असली आनन्द का आधार
छूट गया है।

उद्गम से छूटी हुई नदियों में ज्वार कहाँ?
जड़-कटे पौधों में जीवन की धार कहाँ?

तब भी, जड़-कटे पौधों के ही समान
रोते हैं ये उखड़े हुए लोग बेचारे;
जीना चाहते हैं भीड़-भम्भड़ के सहारे।

भीड़, मगर, टूटा हुआ तार
और तोड़ती है,
कटे हुए पौधे की
जड़ नहीं जोड़ती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहरी तरंगों पर जितना ही फूलते हैं,
हम अपने को उतना ही और भूलते हैं।

जड़ जमाना चाहते हो
तो एकान्त में जाओ ;
अगम-अज्ञात में अपनी सोरें फैलाओ।
अकेलापन है राह
अपने आपको पाने की ;
जहाँ से तुम निकल चुके हो,
उस घर में वापस जाने की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवता हैं नहीं

देवता हैं नहीं,
तुम्हें दिखलाऊँ कहाँ?
सूना है सारा आसमान,
धुएँ में बेकार भरमाऊँ कहाँ?

इसलिए, कहता हूँ,
जहाँ भी मिले मौज़, ले लो।
जी चाहता हो तो टेनिस खेलो
या बैठ कर घूमो कार में
पार्कों के इर्द-गिर्द अथवा बाजार में।
या दोस्तों के साथ मारो गप्प,
सिगरेट पियो।
तुम जिसे मौज मानते हो, उसी मौज से जियो।
मस्ती को धूम बन छाने दो,
उँगली पर पीला-पीला दाग पड़ जाने दो।

लेकिन, देवता हैं नहीं,
तुम्हारा जो जी चाहे, करो।
फूलों पर लोटो
या शराब के शीशे में डूब मरो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मगर, मुझे अकेला छोड़ दो।
मैं अकेला ही रहूँगा।
और बातें जो मन पर बीतती हैं,
उन्हें अवश्य कहूँगा।

मसलन, इस कमरे में कौन है
जिसकी वजह से हवा ठंढी है,
चारों ओर छायी शान्ति मौन है?
कौन यह जादू करता है?
मुझमें अकारण आनन्द भरता है।

कौन है जो धीरे से
मेरे अन्तर को छूता है?
किसकी उँगलियों से
पीयूष यह चूता है?

दिल की धड़कनों को
यह कौन सहलाता है?
अमृत की लकीर के समान
हृदय में यह कौन आता-जाता है?

कौन है जो मेरे बिछावन की चादर को
इस तरह चिकना गया है,
उस शीतल, मुलायम समुद्र के समान
बना गया है,
जिसके किनारे, जब रात होती है,
मछलियाँ सपनाती हुई सोती हैं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौन है, जो मेरे थके पाँवों को
धीरे-धीरे सहलाता और मलता है,
इतनी देर कि थकन उतर जाये,
प्राण फिर नयी संजीवनी से भर जाये ?

अमृत में भींगा हुआ यह किसका
अंचल हिलता है ?
पाँव में भी कमल का फूल खिलता है।

और विश्वास करो,
यहाँ न तो कोई औरत है, न मर्द ;
मैं अकेला हूँ।

अकेलेपन की आभा जैसे-जैसे गहनाती है,
मुझे उन देवताओं के साथ नींद आ जाती है,
जो समझो तो हैं, समझो तो नहीं हैं ;
अभी यहाँ हैं, अभी और कहीं हैं।

देवता सरोवर हैं, सर हैं, समुद्र हैं।
डूबना चाहो
तो जहाँ खोजो, वहीं पानी है।
नहीं तो सब स्वप्न की कहानी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहस्यवाद

अनुभूतियाँ तो सारी की सारी
इन्द्रियों से आती हैं।
मगर, जब हम उनका स्वाद
जरा ध्यान से लेते हैं,
लोग कह उठते हैं,
यह रहस्यवादी है।
कोई किसी की ज़बान को
रोक नहीं सकता।
जमहूरियत, असल में,
बोलने की आज़ादी है।

तब भी, अगर मैं कोई आम खाता हूँ,
तो क्या, उसमें केवल आम ही होता है?
मुझे तो आम खाते समय
कई चीजों का ध्यान होता है।
आम के रस में वसन्त की हवा,
सूरज की गर्मी और धरती का रस,
इन सब का भान होता है।

मेरा ख्याल है,
आम खाने का यही सही तरीका है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और छिपाने की बात भी क्या है ?
यह भाव
मैंने रहस्यवादियों से सीखा है ।

खाते समय सभी इन्द्रियों को बुलाओ ।
एक इन्द्रिय से कभी भी कोई चीज मत खाओ ।
सभी इन्द्रियाँ जब एक विन्दु पर मिलती हैं,
एकाग्रता जन्म लेती है ।
और तब रोटी भी रहस्यवाद का मज़ा देती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महल-अटारी

चिड़िया जब डाल पर बैठती है,
अपना संतुलन ठीक करने को दुम को जरा ऊपर उठाती है।
उस समय वह कितनी खुश नज़र आती है?

मानो, उसे कोई खजाना मिल गया हो;
जीवन भर का अरमान अचानक फूल बन कर खिल गया हो।

या विरासत में कोई राज उसने पाया हो
अथवा अभी-अभी ऐसा नीड़ बनवाया हो,
जिसमें एक हिस्सा मर्द का है
और एक ज़नाना भी;
ड्राइंग-रूम भी है और गुसलखाना भी।

महल-अटारी के लिए आदमी बेकार रोता है।
मैं पूछता हूँ,
इस चिड़िया की तरह वह खुश क्यों नहीं होता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गहराई में जाओ

जहाँ प्रेम है,
उस धरातल से नीचे जाओ;
क्योंकि आत्मा प्रेम से बहुत अधिक गहरी है।
प्रीति है ऊपर की लहलहाती घास,
लेकिन, हृदय पिघली हुई चट्टान है।

पिघली हुई शिलाओं की यह नदी
खामोश भी है और अथाह भी।
मन को वह गर्म भी करती है
और हरती है आत्मा का दाह भी।

अपने पुरातन हृदय की गहराई में उतरो नारी!
अपने आपको देखना छोड़ दो।
अपनी आँखों से ओझल करो मुझे—
मुझे, जिसे तुमने इतने जोरों से प्यार किया है।
आओ, उस शीशे को तोड़ दो,
जिसमें हम दोनों के विम्ब पड़ते हैं,
जिसे देख कर, मन ही मन, हम दोनों डरते हैं।

क्योंकि जीवन की भंगिमा
फिर उस गहराई की ओर चलने लगी है,
जो आँखों से ओझल,
दृष्टि के पार है।
जहाँ जीवित हृदय की कन्दरा है,
अन्धकार है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन, बताती जाओ
कि तुम्हारे हृदय की अँधेरी खान में
जो धातुएँ हैं,
उनमें कोई हीरा भी है,
जिसे हमने और तुमने मिलकर गढ़ा है ?

पारस्परिक विश्वास का कोई नीलम,
अथवा कोई माणिक्य या लाल,
जिस पर मेरा और तुम्हारा विम्ब मढ़ा है ?

अगर ऐसी कोई चीज नहीं है,
तो उचित है कि तुम मुझे छोड़ जाओ।
क्योंकि प्रेम के दिखावटी रूपों पर
अब मेरा फँसना मुश्किल है,
जैसे पावस का
वसन्त की तरह हँसना मुश्किल है।

बेमौसम का प्रेम,
खास कर वह प्रेम,
जो मौसम के अखीर में आता है,
हँसी की चीज़ है।

तब भी, अगर तुम ज़िद करोगी
और इसी नकली प्रेम पर मरोगी,
तो थोड़ी देर जरूर समझाऊँगा।
और तुमने अगर नहीं माना,
तो मैं ख़ुद चला जाऊँगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या तुम्हारे पास बर्बर नारीत्व का
वह पुरातन हृदय नहीं है,
अपने आप को भूलने वाला,
अनुभूति के धागे से झूलने वाला,
जो उस पुरुष के हृदय-सा बलवान है,
जिसे प्यार करने का
तुम्हें शुभा या गुमान है?

अगर नहीं, तो तुम जाओ।
जाओ, अगर तुम्हें यही पसन्द है
कि हाथ में शीशा ले कर बैठी रहो
और अपना आशिक़ अपने आप को कहो।

यह बात मुझ पर नागवार गुजरती है
कि उम्र से उतरती हुई नारी
शीशे में अपने आप पर मरती है;
गरचे जादू छोड़ कर जा चुका है,
वसन्त का आखिरी फूल मुरझा चुका है।

उम्र जिसकी जवानी को तोड़ती नहीं,
बूढ़ी होने पर भी
जो बनाव-सिंगार छोड़ती नहीं;
लालची मैना,
रँगी हुई चोंच, रँगा हुआ डैना।
प्यार हर घड़ी जहीं-तहीं चाहिए।
ऐसी औरत मुझे नहीं चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शैतान का पतन

जानते हो कि शैतान का पतन क्यों हुआ ?
इसलिए कि भगवान
जरा ज्यादा ऊँचा उठ गये थे।

इसी से शैतान का दिमाग फिरा।
दुनिया का संतुलन ठीक रखने के लिए
बेचारा नीचे नरक में गिरा—

भगवान को ललकारता हुआ
कि अगर तुम बिना दाग वाले चित्र हो,
प्रभो ! तुम यदि इतने ऊँचे हो,
इतने पवित्र हो,
तो मैं नीचे अवश्य गिरूँगा।
और जो रास्ता नरक को जाता है,
उसके दोनों ओर अंगूर के बाग लगाऊँगा;
अंगूर की लताएँ, अफीम के पौधे और गूलर के पेड़,
और भी अनेक तरह के फूल रंग-बिरंगे, ढेर के ढेर।

और जो आत्माएँ मेरे समान गिर जायेंगी,
वे खाने को अंगूर पायेंगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थरथराते हाथों से जाम धरे हुए,
बालों में अफीम के फूल भरे हुए,
ये आत्माएँ मस्ती के गीत गायेंगी।
उछलती, कूदती, खेलती,
एक-दूसरी को गुदगुदाती-ढकेलती
हँसी-खुशी के साथ नरक की ओर जायेंगी।

स्वर्ग और नरक
एक ही तराजू के दो पल्ले हैं।
मूंज की डोरी और रेशम के छल्ले हैं।
तराजू के दोनों पल्ले जब हिलते हैं,
कभी-कभी एक दूसरे से जा मिलते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वर की देह

ईश्वर वह प्रेरणा है,
जिसे अब तक शरीर नहीं मिला है।
टहनी के भीतर अकुलाता हुआ फूल,
जो वृन्त पर अब तक नहीं खिला है।

लेकिन, रचना का दर्द छटपटाता है,
ईश्वर बराबर अवतार लेने को अकुलाता है।

इसीलिए, जब तब हम
ईश्वरीय विभूति का प्रसार देखते हैं।
आदमी के भीतर
छोटा-मोटा अवतार देखते हैं।

जब भी कोई 'हेलेन',
शकुन्तला या रूपमती आती है,
अपने रूप और माधुर्य में
ईश्वरीय विभूति की झलक दिखा जाती है।

और जो भी पुरुष
निष्पाप है, निष्कलंक है, निडर है,
उसे प्रणाम करो,
क्योंकि वह छोटा-मोटा ईश्वर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वर उड़नेवाली मछली है।
झरनों में हहराता दूध के समान सफेद जल है।
ईश्वर देवदार का पेड़ है।
ईश्वर गुलाब है, ईश्वर कमल है।

मस्ती में गाते हुए मर्द,
धूप में बैठ बालों में कंघी करती हुई नारियाँ,
तितलियों के पीछे दौड़ते हुए बच्चे,
फुलवारियों में फूल चुनती हुई सुकुमारियाँ,
ये सब के सब ईश्वर हैं।
क्योंकि जैसे ईसा और राम आये थे,
ये भी उसी प्रकार आये हैं।
और ईश्वर की कुछ थोड़ी विभूति
अपने साथ लाये हैं।

ये हैं ईश्वर--
जिनके भीतर कोई अलौकिक प्रकाश जलता है।
लेकिन, वह शक्ति कौन है,
जिसका पता नहीं चलता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निराकार ईश्वर

हर चीज, जो खूबसूरत है,
किसी न किसी देह में है;
सुन्दरता शरीर पाकर हँसती है,
और जान हमेशा लहू और मांस में बसती है।
यहाँ तक कि जो स्वप्न हमें बहुत प्यारे लगते हैं,
वे भी किसी शरीर को ही देखकर जगते हैं।

और ईश्वर ?
ईश्वर को अगर देह नहीं हो,
तो इच्छा, भावना, बल और प्रताप
वह कहाँ से लायेगा ?
क्या तुम समझते हो कि ईश्वर गूँगा है ?
मगर, वह निराकार हुआ तो बोल भी कैसे पायेगा ?

क्योंकि ईश्वर जितना भी दुर्लभ हो,
समझा यह जाता है कि वह हमें प्यार करता है।
और चाहता है कि हम सृष्टि के सिरमौर बनें,
यह बनें, वह बनें या कुछ और बनें।
गरचे, उसकी शान निराली है,
मगर, सब कहते हैं
कि ईश्वर प्रतापी और शक्तिशाली है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले तन या मन ?

लोग कहते हैं कि वास्तविकता आत्मा से निकली है ;
और शरीर शून्य का स्थूलीकरण है।
वायु हमारी असली देह
और शून्यता असली बस्ती थी ;
यानी हमारा जन्म लेना एक प्रकार का मरण है।

लोग कहते हैं कि शुद्ध आत्मा शरीरहीन होती है।
आकार निराकार से जनमा है।
जो कुछ है, वह कुछ नहीं से उत्पन्न हुआ है।
और सारा संसार विचार से जनमा है।

मेरा ख्याल है,
ये सब मूर्खता की बातें हैं।
जल में जो मीन तैरता है,
उसकी कल्पना किस मस्तिष्क ने की थी ?
आगे जो-जो चीजें बननेवाली थीं,
उन सब की तसवीर
क्या उसने पहले ही खींच ली थी ?

भगवान का मन भी
कल्पना तो उन्हीं चीजों की करेगा,
जो बन गयी हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्याधर स्मृति संग्रह
04304

वजूद में आ चुकी हैं,
शरीर धारण करके
खड़ी हो चुकी हैं,
यानी पानी, मिट्टी या प्रकाश बनकर छा चुकी हैं।

दर्शन की अपेक्षा धर्म अधिक जानता है।
इसीलिए तो यह बात
वह विश्वास के साथ मानता है
कि ईसा ईसा थे ही नहीं,
न उन्होंने किसी को रोगमुक्त किया,
जब तक किसी मानवी ने
उन्हें अपनी कोख से जन्म नहीं दिया।

पैदाइश के बाद ही ईसा ईसा बनने लगे,
दूध पिया, रोटियाँ खायीं और उम्र में बढ़े,
और धीरे-धीरे सृष्टि की चोटी पर चढ़े।

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

ईसा शरीरवान् थे,
गरचे सीमित उनकी आवश्यकताएँ थीं,
आत्मा पवित्र
और निर्मल सारी इच्छाएँ थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराने ज़माने के मर्द

जब अफलातून ने विचारों के बहाने
बहुत-सी झूठी बातों का प्रचार किया,
उसके पहले आदमी आदमी था ;

बदन से भरा-पूरा और भीतर से पुष्ट ;
तृषाओं का तत्त्वज्ञानी नहीं ;
बल्कि, हँसता-खेलता खुशी से जीनेवाला प्राणी,
अपने आपसे संतुष्ट ;
चिंताओं से मुक्त,
पागल कर देनेवाले विचारों से बिलकुल अछूता,
आन्तरिक द्वन्द्वों से सर्वथा विहीन ;
धरती पर उस प्रकार निश्चित विचरनेवाला
जैसे नदियों में मौज से तैरते हैं मीन।

तब मर्दों के बाल "सैमसन" के समान लंबे थे।
शेर अगर राह रोकें,
तो मर्द उनसे खम ठोंककर भिड़ते थे।
उनकी धनुर्ज्या से बल-भरी टंकार उठती थी।
और उनके बाण
लक्ष्य से अलग नहीं गिरते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें मालूम था
कि अपने अनस्तित्व का पता लगाना
कोई अच्छा काम नहीं है।
और अस्तित्व से खाली वे थे भी नहीं,
आज के नकली आदमियों के समान
मर्द वे नकली और जाली थे भी नहीं।

मुझे लगता है, वे भरे-पूरे मर्द
फिर आ रहे हैं।
सुनो, यह उन्हीं दाढ़ीदार मर्दों का
गगनभेदी अट्टहास है।
नदियाँ सहम रही हैं,
पर्वत थर्रा रहे हैं।

योद्धाओं की-सी कमर पतली और कसी हुई,
चौड़ी छातियों पर निशान भालों के,
पाँव ऐसे सुघड़ और सुडौल हैं,
मानो, हों चाँदनी में नाचनेवालों के।

नाचते-नाचते ही वे अदृश्य हुए थे,
और नाचते-नाचते ही फिर आ रहे हैं।
नया आदमी यह समझता भी नहीं
कि उनके चेहरे
क्यों इतने पुष्ट और लाल हैं।
न हम यही समझते हैं
कि वे इतना खुलकर क्यों हँसते हैं ;
क्यों इतनी बेफिक्री से गा रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृत्यु का गीत

मृत्यु के गीत गाओ, अरे गाओ !
अगर स्वर समर्थ है।
क्योंकि मृत्यु के गायन के बिना
जीवन के गीत का न अर्थ है।

मृत्यु के गीत मरने के गीत नहीं हैं,
गीत हैं वे सबसे लम्बी सफर के !
उस अनजाने देश के गायन,
जहाँ आदमी को जाना पड़ता है मर के।

दुनिया से जाने के समय
आत्मा क्या छोड़ती, क्या लेती है ?
जिसे सब मृत्यु कहते हैं,
वह उसे कैसी दिखायी देती है ?

परतों पर परतें अन्धकार की।
और आत्मा उनके भीतर प्रवेश करती है।
प्याज के छिलकों के समान
अँधेरे पर अँधेरा है।
मरने पर भी सृष्टि का अर्थ आसानी से नहीं खुलता।
सत्य को छिपाये हुए
तिमिर का घेरों पर घेरा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी परतों के पार,
अंधकार के नीचे,
अतल में वह जगह है,
जहाँ विस्मृति विराजती है,
पूरी निःशब्दता के बीच
शान्ति राजती है।

यहीं पहुँच कर आत्मा
पूर्णतः एकान्त होती है।
अशब्द मौन के पास
जाने पर शान्त होती है।

अन्धकार की परतों का गान करो।
जहाँ एकान्त का मूल बिन्दु है, उसे खोजो।
विस्मृति के गाओ गान,
जहाँ प्राणों को शान्ति मिलती है।
उस गहराई का करो संधान,
जहाँ अशब्दता की कली खिलती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रचना

रचना दैवी प्रेरणा से होती है,
सृष्टि का यही भेद है।
और यह प्रेरणा दिमागी कसरत नहीं,
न बुद्धि का स्वेद है।

बुद्धि के परे भी कोई घटा घहराती है।
तब भी कौन कहे, प्रेरणा कहाँ से आती है ?

लेकिन, हर कलाकार यह जानता है
(और अपने अनुभव से सत्य मानता है)
कि जो चीज उसने गढ़ी है,
बुद्धि की पिटारी में थी ही नहीं।
यह रचना भी उसकी कलम से उतरेगी,
ऐसी चिंता उसने कभी की ही नहीं।

पहले जरा भी नहीं भान हुआ,
घटना घट गयी, तब उसका ज्ञान हुआ।

कोई अजनबी दर्द है
जो एक-ब-एक उभर आता है।
यह मत समझो
कि कविता रचनेवाला जीव सुख पाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मगर, मजबूरी की बात
कि इस दर्द से वह भाग नहीं सकता;
आस-पास जो मेघ मँडराते हैं,
उन्हें त्याग नहीं सकता।

प्रेरणा के चंग पर चढ़ी
धड़कन बेहोशी में काम करती है,
हाँ, जब कविता जन्म लेकर खड़ी हो जाती है,
दिल से उठकर दिमाग को सलाम करती है।

ईश्वर सबसे बड़ी प्रेरणा है।
किन्तु, पहले से वह भी कुछ नहीं जानता है।
प्रेरणा जब रक्त और मांस का रूप ले लेती है,
ईश्वर भी उसे तभी पहचानता है।
और अपनी सृष्टि पर चकित
वह भी सोचता है :—

"वाह ! अजीब बात !
यह तो खूबसूरत आदमी बन गया।
अच्छा, इसे पुचकारें और प्यार करें।
इसे ठीक से समझें,
इसके बारे में विचार करें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिखा

अगर तुम्हारे भीतर कोई शिखा जलती है,
तो उसे अभंग जलने दो।

अगर यह लपट ऊपर की ओर चलती है,
तो उसे बेरोक-टोक चलने दो।

पवित्रता की यह लपट, पुण्य की आग
समुद्र के भीतर जो स्फटिक छिपा है,
उसकी छाती से उठनेवाला उज्ज्वल यह राग
क्षण भर भी अहंभाव से
यदि तुम्हें मुक्त करता है,
जितनी छोटी बातें हैं
उनसे वियुक्त करता है;

तो उतनी देर के लिए
तुम मर्त्य साधारण नहीं,
देव हो;
ईसा हो अथवा महादेव हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावी धर्म

कहते हो, छूना हेय कर्म है ?
स्पर्श के रहस्य में भविष्यत् का धर्म है।
मन है स्पर्शहीन,
आत्मा अदेह,
इच्छा परस से दूर है।
लेकिन, मनुष्य मजबूर है।

इसीलिए, मृत्यु प्रथम आती है,
चेतना में निद्रा भर जाती है।

तब आता है शुद्ध और स्थायी एकान्त,
सब कुछ जब हो जाता शान्त,
धर्म की उठती झंकार है।
मनुष्य स्पर्श पाकर उठ बैठता है।
परस का मंत्र उसका करता उद्धार है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्यधन

सूर्यधन का धनी होने के लिए
केवल सूर्यधन ही काफी है,
अपने स्नेह से आप जलनेवाला मन ही काफी है।

क्या हुआ, अगर ऐसा आदमी नहीं है
जो तुम्हारे कान में कीर्तन चुलाता रहे,
अपनी साँसों से बैलून के समान
तुम्हें फुलाता रहे?

बनने दो, और लोग जो बनना चाहें।
मगर, तुम अपने आप में समाओ,
कान बन्द करो और आँखें मीचो,
अपनी सारी अमीरी सीधे सूर्य से खींचो।

मैं जो कुछ हूँ, केवल सूर्य से हूँ।
जनता की राय से अपने को नहीं मापता हूँ।
न तो लोगों की कानाफूसी सुनता हूँ,
न उनके चेहरों के भाव भाँपता हूँ।

अगर बातें ठीक से शुरू की जायें,
तो एक-एक बच्चा सूर्यमय बन सकता है;
सूर्य की अमीरी से लैस,
चमकदार और निर्भय बन सकता है।

तब दुनिया में ज्यादा लोग मरे नहीं होंगे।
समाज में रुपयों के गुलाम
और धन के कीट भरे नहीं होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ण जीवन

युद्ध में पीठ दिखा सकते हो ?
दुश्मन से मुँह मोड़ सकते हो ?
यानी जितनी चिंताएँ तुम्हें घेरती हैं,
उनसे संबन्ध तोड़ सकते हो ?

अगर नहीं,
तो पूरी तरह जीना दुश्वार है ;
असली जो रस है,
उसे पीना दुश्वार है।

चिंता में लगा हुआ आदमी,
इस भय से जगा हुआ आदमी
कि मरना पड़ा तो, स्यात्, कुछ भी न पायेंगे,
अंक तो बनेंगे नहीं, शून्य रह जायेंगे।

मरने से डरने को
मानता जो पुण्य है ;
मेरा ख्याल है, ऐसा आदमी
अभी भी शून्य का शून्य है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार

प्यारे, मुझे प्यारे विचार हैं।
पर, वे नहीं,
जो कहे जा चुके,
फिर भी, कहे जाते बार-बार हैं।

तोड़-मरोड़ से नवीन बननेवाली चीजों से घृणा करता हूँ।
मैं तो सिर्फ उन विचारों पर मरता हूँ,
जो बिलकुल नये सितारों के समान उगते हैं,
पक्षी जो केवल उन दानों को चुगते हैं,
जिन्हें पहले किसी ने नहीं खाया था।
यानी वह भाव
जो भाषा में पहले कभी नहीं आया था।

विचार है वह अज्ञात जीवन
जो अंधकार से उठकर ऊपर आता है।
विचार वह निकष है,
जिस पर बयान परखा जाता है।

जिन्दगी के चेहरे पर टकटकी लगाना
और पढ़ना वह बात, जो पढ़ी जा सकती हो,
करना ऊँची चोटियों का ध्यान,
और चढ़ना, जहाँ तक, वह चढ़ी जा सकती हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार अनुभूतियों का निदिध्यासन है।
निष्कर्षों पर पहुँचने की क्रिया,
विचार अशब्दता अधिक, अल्प भाषण है।

अक्ल की चालाकी न तो बुद्धि का व्यायाम है।
विचार उस पूरे मर्द का नाम है,
जिसका सारा अस्तित्व जगा हुआ है,
सत्य के संधान में लगा हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो तरह के लोग

आदमी अगर आदमी को
देखकर रह जाये,
आगे जो है भेद,
उसे नहीं समझ पाये,
तो यह समझो
कि सब नष्ट होता है।
यंत्र का पुतला अगर बीच में आये,
तो आत्मा को कष्ट होता है।

लाजिम है, कुछ लोग
काम करते हुए भी ध्यान करें,
देवताओं की आँखों से आँखें मिलायें
और उनमें जो ज्योति है,
उसका सम्मान करें।

और बाकी लोगों को उचित है
कि जिन थोड़े लोगों ने
देवताओं की आँखों से आँखें मिलायी हैं,
उनकी बात मानें,
उन्हें अपना गुरु करके जानें।

धारा पर बुद्धि का न ज़ोर है।
नदी पीछे मुड़कर बहेगी नहीं,
आदमी को अपना मकसद कहेगी नहीं,
उसका प्रवाह देवताओं की ओर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार तत्त्व

हमारी इन्द्रियों के लिए
तत्त्व चार ही हैं।
वे चार ही थे, चार ही रहेंगे ;
क्योंकि वे तत्त्व हैं जीवन के
कविता के, ज्ञान के,
चूमने और खाने-पीने के,
समाधि और ध्यान के।

जीवन की ये चार जड़ें
और जड़ों से अधिक प्रवल हैं।
तुम्हें पहले से अगर मालूम नहीं है,
तो बताता हूँ,
ये चार तत्त्व पृथ्वी, अग्नि, वायु और जल हैं।

और तत्त्वों के लिए तुम्हें
प्रयोगशाला में जाना होगा।
दूरबीन और खुर्दबीन पर
काफी समय बिताना होगा।

लेकिन, ये चार तत्त्व हमेशा हमारे साथ हैं।
आखिर, दुनिया और किसे कहते हैं ?
हक तो यह है कि इन तत्त्वों को हम नहीं ढोते,
वे ही हमें साथ किये रहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाप

पाप ईश्वर के खिलाफ काम है,
ऐसा कहना सन्देह से खाली नहीं है।
ईश्वर न पुण्य से खुश होता है,
न पाप से डरता है।
सच तो यह है कि वह
पुण्य और पाप की परवाह ही नहीं करता है।

लेकिन आत्मा,
जो हमारे रक्त और मांस में रहती है,
अन्याय से दुख मानती है
और पाप को वह बिलकुल नहीं सहती है।

आत्मा हमारी सबसे बड़ी गहराई का नाम है।
और उसका यह काम है
कि वह बिना भाषा के बोले,
हम जो कुछ सोचते या करते हैं,
उसे समझे, बूझे और तोले;
घड़ी-घड़ी हमें सावधान करे;
उस ऊँचाई पर से हमारा आह्वान करे,
जहाँ देवता आते-जाते हैं
और इशारों से हमें अपने पास बुलाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिए अगर हम
अपनी गंभीरतम चेतना के ख़िलाफ जाते हैं,
तो हम पापी हैं।
क्योंकि हमारे भीतर जो असली तत्त्व है,
उसे हम बेवकूफी में गँवाते हैं।

मन के भीतर अगर कोई गाँठ पड़ गयी,
तो वह खोले नहीं खुलेगी।
और भीतरी चेतना में अगर कालिख लग गयी,
तो वह मुश्किल से धुलेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्लान्ति

मेरी आत्मा बेखुदी का आलम खोजती है,
क्योंकि दिन भर काम करते-करते
वह थक गयी है।

मगर, धरती पर रूह की थकन उतारने वाली
अब शाम कहाँ?
आत्मा जिसे खोजती है,
उस बेखुदी का नाम कहाँ?

बेखुदी, जो शान्ति के बाद
अँधियाली के समान आती है,
और मन को
अपने आप से कहीं दूर ले जाती है।

क्योंकि आदमी ने
धरती की शान्ति को मार डाला है।
विस्मृति के जिन अशब्द कुंजों में
देवता उतरते थे,
उन्हें बेरहमी से उजाड़ डाला है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनम्रता

डींग हाँकना विनम्रता नहीं है।
मगर, लोग विनम्रता की भी डींग हाँकते हैं।
जो चीज़ उन्हें स्वाभाविकता से नहीं मिली,
उसे विनम्र होकर माँगते हैं।

सच पूछो, तो ये लोग खटमल हैं।
जब आदमी नींद में होता है,
ये उसका लहू पीते हैं।
सिर तान कर चलनेवाले जिन्दा लोग
इन्हें पसन्द नहीं आते।
ये मरे या मुमूर्षु जीवों को
खाकर जीते है।

दूसरों के सामने
तैयारी से झुकना विनम्रता नहीं,
अपने आपका अपमान है।
मैं तो किसी के भी सामने नहीं झुकता,
क्योंकि मैं मानता हूँ
कि मेरी ही तरह
हर आदमी ऊँचा इंसान है।

अच्छा हो कि नकली विनम्रता का
रिवाज़ रुके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न मैं किसी के सामने झुकूँ,
न कोई मेरे सामने झुके।

लेकिन, जब भी किसी आदमी के भीतर
मैं रोशनी की लपट
या जीवात्मा की तड़प पाता हूँ,
तो उसे बुलाता नहीं, उसके पास मैं खुद जाता हूँ।
और कहता हूँ--
कि ओ मेरे आत्म-बन्धु!
मैं तुम्हारा अभिनन्दन करता हूँ।
और तुम्हारे पाँव में जो धूल लगी है,
उसका मैं चंदन करता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन ज्ञान

समुद्र जल का सबसे पुराना कोष है।
फिर भी उसके भीतर एक दोष है।
और वह यह
कि समुद्र के खारे जल को मीठा बनाना
बहुत ही मुश्किल काम है।
इसीलिए, प्यासों की दुनिया में
समुद्र बदनाम है।

और पुराने सत्य का भी यही हाल है।

पुरानी कहावतें, पुरानी अक्ल
और पुरानी अनुभूतियाँ
यानी प्राचीन चिंतन की सभी विभूतियाँ
ऐसी हैं, जिन्हें आज की छलनी में
छानना आसान नहीं है।
जो बातें पुराने लोग कह गये हैं,
उन्हें ठीक से जानना आसान नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मा और क्रान्ति

जीवन की साँस
और अंधड़ के झोंके,
जो क्रान्ति को उठाये हुए आते हैं,
एक ही चीज़ हैं।

क्रान्ति की हवा से
वे ही लोग घबराते हैं,
सृष्टि के साथ बाँधनेवाले तार
जिनके टूट चुके हैं।
संक्षेप में, जो लोग
आत्मा के आलिंगन से छूट चुके हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़हर

ज्यादा लोग जीवित नहीं,
मरे हुए हैं।
अपनी आत्मा के सामने
आप डरे हुए हैं।

जानते हो, किसने मनुष्यता को मारा है ?
असली क़ातिल का नाम झूठ है।

झूठ यानी बुरी किस्म की बहानाबाज़ी।
चीज़ हक़ीक़ी हो या मजाज़ी,
बुरी बात है
कि जिसकी अनुभूति हमें हुई नहीं
उसके अनुभव का स्वांग भरें ;
दुनिया को ठगें,
मगर, अपनी नज़रों में आप मरें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़िन्दगी की साँस

ज़िन्दगी की साँस परिवर्तन की तेज़ हवा है,
जिसके साथ विध्वंस का उच्छ्वास मिला होता है।
हरियाली से भरी कोई नर्म टहनी,
जिस पर पावक का फूल खिला होता है।

लेकिन, अगर तुम पूरी जिन्दगी को
गहरी साँस के साथ खींचना चाहो,
तो एकान्त में जाओ।
शान्ति के बीच समाधि लगाओ।
चीजों को देखने का काम बन्द करो।
अँधेरे में बसो और आनन्द करो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेखुदी

भूलना, असल में, अपने आपको
ईश्वर को अर्पित करना है।

जहाँ-जहाँ स्मृति की खिड़कियाँ खुली हैं,
व्यग्रता की बहती बयार है।
जब तक ये वातायन बन्द नहीं होते,
ईश्वर नहीं मिलेगा।
ईश्वर का वास सारी स्मृतियों के पार है।

ईश्वर तब मिलता है,
जब हम अपने आपको भूलते हैं।
बहुत जानना, आदमी को
असली जानकारी से अलग करता है।
तब भी, ज्ञान बघार कर,
कितना हम फूलते हैं!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्य का ज्ञान

सत्य की अनुभूति पाना चाहते हो?
व्योम के उर में समाना चाहते हो?
तो उचित है,
तर्क की बातें नहीं बोलो।
अक्ल और सूझ को
एक नहीं; सभी इन्द्रियों के साथ घोलो।

सत्य से अगर दूर रह जाओगे,
इन्द्रियों से मिलनेवाला
संतोष नहीं पाओगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भविष्य के संकेत

देखना हो चाहते भविष्यत् में क्या है?
तो देखो उन्हें,
जो सूखे नहीं, नम हैं;
जिनकी उम्र
तीस साल से अभी कम है।

जो भी लोग ज़िन्दादिल,
ताज़े, नौजवान हैं,
आज सारी दुनिया में,
लगभग, समान हैं।

अल्हड़, मुलायम मिजाज से,
रूठे हुए बूढ़ों के समाज से।
घिसे भाँड़े-बरतन तोड़नेवाले,
पुराने मूल्यों से नाक सिकोड़नेवाले।

चेहरों पर कुछ थोड़ी
आभा युद्धहीनता की,
चिन्ता नहीं सुख की,
परवाह नहीं दीनता की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द नहीं, शोर नहीं,
ज्ञान नहीं,
एक छोड़
और किसी सपने का ध्यान नहीं।

फूलों से भर जाने को
तैयार फुलवारी है,
बस, एक सही स्पर्श की
इन्तज़ारी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भविष्य का युद्ध

हमारी औद्योगिक सभ्यता जब टूटेगी,
स्पर्शवाली सभ्यता की धारा तब फूटेगी।
अमृत से मानव-मन शुद्ध होगा,
धरती पर कहीं नहीं युद्ध होगा।

देखते हो आदमी के दिल को ?
कुहरे में दीपती-सी कलिका झिलमिल को ?
जिस ओर हो कर
यह खोल रही दल है,
उधर कहीं भी नहीं युद्ध का अनल है।

है तो, बस, केवल अनेकता है।
अगम वैविध्य को
सँभाले हुए एकता है।

विविधता जब प्रबल होती है,
लड़ाई के देवता रोते हैं,
दुनिया को एक करने की सनक से
युद्ध उत्पन्न होते हैं।

4 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदमी

आदमी के बारे में
मैं केवल यह चाहता हूँ
कि उसके भीतर की चिनगारी
अभंग रहे।
अपनी आग को वह कभी भी बुझने नहीं दे।
और जो आपदाएँ पड़ें,
वीरता के साथ सहे।

चिनगारी चमकती रहे
सदा उज्ज्वल हो कर,
आदमी बचाये उसे
सर्वस्व खो कर।

लेकिन, हाय !
सभ्यता ने तृष्णा की अति से
इस आग को कुचल डाला है;
दीपक की लौ को तोड़ दिया है।
आदमी के भीतर अब आग कहाँ जलती है ?
सभ्यता ने उसे
मिट्टी का जीवित पुतला बनाकर छोड़ दिया है।

क्योंकि चिनगारी जब बुझ जाती है,
शैतान का काम बन जाता है।
आदमी तब रुपयों का दास,
मज़दूरी का गुलाम बन जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुखी आत्मा

दुखी, सच पूछो तो, वह है,
जो मर कर शान्त होना नहीं जानता है।
जो हर जगह अपने को आगे ढकेलने को
जिस तिस से लड़ाई ठानता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुक्म

ईसा ने दिया हुक्म,
पड़ोसियों को प्यार करो।

नतीजा यह कि या तो झूठी जिन्दगी जियो
या अपना संहार करो।

पड़ोसी हो या बे-पड़ोसी हो,
आदमी किसी को भी
हुक्म से प्यार नहीं करता है।
और प्यार का अगर वह स्वाँग भरे
तो आदमी जीता नहीं, मरता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौकरी

आदमी को काम करना ही चाहिए,
धरती को पसीने से भरना ही चाहिए।
लेकिन, शरीर नहीं, मन के वास्ते,
धन नहीं, जीवन के वास्ते।

अपना कर्त्तव्य पहचानो,
आज्ञा अवश्य मानो,
लेकिन, नहीं अफसर की,
बल्कि, उस नर की,

आँखों में आँखें डाल
        जिसने देवताओं को देखा है;
जिसकी आकृति में
        जीवन की प्रकाशमयी रेखा है।

केवल आदमी होना काफी नहीं।
आदमीयत के आगे एक और जहान है।
उस लोक तक जो जाता नहीं;
आदमी को ऊपर उठाता नहीं;
किसी भी तरह नहीं पूरा इंसान है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जागना और सोना

नींद आने पर मैं हूँ नहीं,
कहीं और चला गया हूँ।
जिन्दगी ने मुझको छोड़ दिया है,
दुनिया ने, जैसे, नाता तोड़ लिया है।

और तब भी, दुनिया में नींद से अधिक
और कोई वस्तु सुन्दर नहीं है।

रौशनी नहीं, ख्वाब नहीं,
नींद खूब गहरी है,
चेतना, मानो, विस्मृति
के शिखर पर ठहरी है।

नींद जब खूब गहरी आती हो,
उससे अच्छी रात क्या होगी ?
सोने से बढ़कर, मैं पूछता हूँ,
और बात क्या होगी ?

हाँ, हमारा सारा मकसद आराम नहीं है।
मैं नहीं कहता
कि गहरी नींद से जग पड़ना
अच्छा काम नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मगर, पूछने की बात तो यह है
कि रात तुम ठीक से सोये या नहीं ?

क्योंकि वरदान है वह नींद
जो घनी हो।
जगने पर ठीक यह महसूस होता है,
मानो, दुनिया नये सिरे से बनी हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैगम्बर

संध्या का गुलाबी आसमान,
सुहावनी घड़ी है;
क्षितिज के पास, आदमी के दरवाजे पर
विचारों की एक माता
चादर लपेटे खड़ी है।

और मर्दों का हाल देखो कि वे
इस सुन्दरी से अपना मुँह छिपा रहे हैं।
तेजस्विनी का रूप इतना प्रखर है
कि मर्द उसकी आँखों से
आँखें नहीं मिला सकते;
लगता है, वे अपनी नामर्दी के कारण
शरमा रहे हैं।

औरत तो उस दूल्हे की खोज में है
जो बीज बोकर विचार उपजाये;
मगर, घबराये हुए मर्द चाहते हैं
कि दरवाजे से यह रूपसी लौट जाये।

मर्दो! अगर इस नारी के
उर्वर आलिंगन से इनकार करोगे,
तो घाव इसे नहीं, तुम्हीं को लगेगा।
और दर्द से यह औरत नहीं मरेगी,
बल्कि, तुम खुद मरोगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीमारी का इलाज

मैं यंत्र नहीं हूँ,
न फकत कल-पुर्जों का जोड़ हूँ।

मैं बीमार इसलिए नहीं हूँ
कि मेरा यंत्र बिगड़ गया है,
कोई काँटी काम नहीं करती है
या किसी पुर्जे का पेच उखड़ गया है।

मैं बीमार इसलिए हूँ
कि मेरी आत्मा को चोट लगी है;
भावनाओं की अज्ञात गहराई में
कहीं कोई वेदना जगी है।

और आत्मा का घाव
बहुत जल्दी नहीं सूखता।
इसकी चिकित्सा का एक ही राज़ है
कि एकान्त पा कर पछताओ और रोओ,
अपने घाव को अपने ही आँसुओं से धोओ।
क्योंकि काल सबसे बड़ा वैद्य है
और सब्र से बैठना
ऐसी पीड़ाओं का सबसे सही इलाज़ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महसूस करो ग़लतियों को
जिन्हें तुमने कभी किया होगा।
उस ज़हर का पता लगाओ
जिसे, ग़लती से, तुमने पिया होगा।

छिपाने से ग़लतियाँ ठीक नहीं होती हैं।

काँटे अगर आत्मा से निकल गये,
पीड़ा, आपसे आप, मरेगी।
और किसी भी उपाय से
हालत नहीं सुधरेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौज-मजे का इन्किलाब

अगर इन्किलाब करना हो
तो यह काम न तो जद्दोजहद, न रेल-पेल में करो।
क्रान्ति अच्छी चीज है,
यह काम हँसते-हँसाते, खेल-खेल में करो।

क्रान्ति इसलिए मत करो
कि कुछ लोगों से तुम्हें नफरत है,
बल्कि, इसलिए कि ज़िन्दगी में
तुम नयी साँस फूँकना चाहते हो;
जिनकी आँखें केवल रुपयों पर गड़ी हैं,
उनकी आँखों पर थूकना चाहते हो।

और क्रान्ति कभी भी
दौलत के वास्ते नहीं करना।
रुपयों पर लानत भेजो।
चाँदी के ठीकरों पर क्या मरना ?

योजना ग़लत है समत्व फैलाने की;
समत्व तो अभी ही बहुत काफी है;
समाज में शक्ति चाहिए समता पचाने की।

काम यह करो
कि जिस गाड़ी में सेब भरे हैं,
माल और खजाने युगों के धरे हैं;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे उलट डालो।
जरा यह खेल भी तो देखो
कि गिरते समय सेब कैसे हरहराता है।
माल लुढ़क कर
कितना उधर जाता, कितना इधर आता है।

और मज़दूरों के लिये इन्किलाब !
बात कुछ कम जँचती है।
उज्र क्या इसमें कि साहुकार भी फकीर बने ?
मगर, अच्छी बात यह है
कि हर आदमी जरा-जरू अमीर बने।

मजदूरी नीलाम न हो,
न कोई कर्ज ले के सूद भरे।
जैसे खुला हुआ गधा दुलत्ती फेंक कर नाचता है,
हर आदमी, उसी तरह, खुशी में उछल-कूद करे।

और अन्तर्राष्ट्रीय श्रम के लिए तो
क्रान्ति बिलकुल ही वृथा है।
आदमी को मजदूर बनाना
दुनिया की सबसे बुरी प्रथा है।

इस कलंक को अब धोना ही चाहिए,
जो मजदूर है, उसे मनुष्य होना ही चाहिए।

मेहनत को मौज-मजे का खेल बनाओ,
आदमी को सबसे पहले यह समझाओ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि मेहनत ज़िन्दगी का असली राज़ है।
और जो काम करता है, वह मज़दूर नहीं,
इन्सानियत का सिरताज़ है।

ऊँचा वह है जो अपने पसीने से समाज को सींचता है।
और वह पापी है, जो गद्दी पर तोंद बजाता है
या पड़ा-पड़ा हुक्के का कश खींचता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ग और जनता

इसी मही पर जनता भी है, वर्ग भी;
बड़े-बड़े बाबू भी, भैया खर्व भी।
दोनों हैं दो, एक मगर उनकी धरणी है;
दोनों की ईजाद मशीनों की करनी है।

वर्ग श्रेष्ठ है,
क्योंकि वही यंत्रों का मन है।
जनता भी है श्रेष्ठ,
क्योंकि आखिर यंत्रों के
हाथ-पाँव तो यही मलिन, साधारण जन हैं।

झूठ नहीं यह बात कहा था जिसे किसी ने,
"हमीं नहीं तो परमेश्वर, बोलो,
किस भाँति जियेगा ?
बोलेगा किस तरह ?
और जब भूख लगेगी,
निराकार किसके मुख से
खायेगा और पियेगा ?"

ईश्वर पर यह उक्ति भले कुछ कम घटती हो;
माना, जो है खुदा, आदमी का मुहताज़ नहीं है।
कल-पुर्जों पर, मगर, बात यह पूरी तरह सही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर आदमी किसी रोज़ रोटियाँ नहीं लायेगा,
निश्चय ही, देवता यंत्र का भूखा रह जायेगा।

खतरों में ज़िन्दगी खड़ी जब तक अपने हाथों से
सहलाती है पीठ, अंग पोंछती, पाँव मलती है,
यंत्र तभी तक आँख मूंद बेफिक्र काम करते हैं,
और तभी तक तन्दुरुस्त होकर मशीन चलती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुर्जुआ

बुर्जुआ जानवर है, जानवर।
खास क़र, मादा नहीं, नर।

बदन मुलायम, खुशनुमा सूरत है।
बिलकुल तोहफे में देने लायक मूरत है।
सौगात भेजूँ? रखोगे सहेज कर?
गुलदस्तों के पास किसी टेबुल या मेज़ पर?

कितना खूबसूरत? कैसा तन्दुरुस्त है?
सुख में पले हुए मस्त आदमी का नमूना!
छाती चौड़ी, बाहें भरी, कंधा पुष्ट है;
दिल मुलायम है और मन भी नहीं दुष्ट है।

ईश्वर ने अपने अनुरूप इसे गढ़ा है।
बातें कितनी तहज़ीब से करता है?
और आदमी भी यह काफी लिखा-पढ़ा है।

रोज शाम को कसरत, व्यायाम या खेल-कूद के लिए
मैदान में जाता है।
और मोटर पर तीस मील से वापस आता है।

सोचो, क्या इसके समान
बनना नहीं चाहोगे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाने-पीने से निश्चिंत, मस्त-मौला;
अगर बहादुरशाह नहीं तो, कम से कम, आसफुद्दौला।

लेकिन, सारी बातें इतनी ही नहीं हैं।
जरा रुको
और इसे किसी विपरीत भाव से टकराने दो;
कोई ऐसी परिस्थिति इसके सामने आने दो,
जिसमें किसी नैतिक उलझन का रंग हो;
यानी जिस परिस्थिति का यह ढंग हो
कि वह आदमी से नयी समझदारी की माँग करे।

तब देखो, यह कैसे चकराता है,
किस कदर परीशान होता है! कितना घबराता है!

जब तक परिस्थितियाँ अनुकूल हैं,
बुर्जुआ काफी चतुर और प्रबल दिखायी देगा।
लेकिन, जैसे ही कोई विरोधी बात आयेगी,
बुर्जुआ की बुद्धि ठिठक जायेगी।

क्योंकि बुर्जुआ जानवर है, जानवर।
खास कर, मादा नहीं, नर।

सीधा, छरहरा, देखने लायक और सुहाना,
कुकुरमुत्ते की तरह बना-ठना, ठाठ से मस्ताना।
अमरबेल की तरह दूसरे वृक्षों पर छानेवाला,
अपने से बड़ी जिन्दगी को चूसकर खानेवाला।

और इतने पर भी वह बेस्वाद है,
बदमज़ा बड़ा है।

5

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि एक ही जगह पर
वह बहुत दिनों से खड़ा है।

चमड़ी मुलायम है, चेहरा आबदार है,
नख से सिख तक बहुत अच्छा आकार है।
लेकिन, पेट तोशक की तरह गुलगुला है,
छूकर देखो तो यह आदमी
भीतर से भी पुलपुला है।

विचार ऊँघते हैं।
भावना छूँछी थरथराती है।
बुर्जुआ को देखकर
मुझे उबकाई आती है।
रेशम ओढ़कर पुराने बिस्तर पर सोता है।
मर्द आदमी क्या ऐसा होता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुर्जुआ और बालशेविक

बुर्जुआ और बालशेविक के बीच
गर चुनाव हो,
तो मैं बुर्जुआ को चुनूँगा ।

वैसे तो, बुर्जुआ न जज है, न काज़ी है,
फिर भी, आदमी के साथ
वह करता जरा कम दस्तन्दाज़ी है ।

मगर, रौशनी का नाम लेते ही
मन में अँधेरा झाँक जाता है ।
इसी तरह, बुर्जुआ के आते ही
बालशेविक, आपसे आप, आता है ।

क्योंकि बुर्जुआ ने ही
बालशेविक को पैदा किया है ।
एक अर्ध-सत्य ने
दूसरे अर्ध-सत्य को जन्म दिया है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दकियानूस

अरे ओ दकियानूस,
जिसका मिजाज, सड़ने पर भी, गरम है।
अरे ओ उदारतावादी,
जिसकी मिट्टी, ज़रूरत से ज्यादा, नरम है।
तुम दोनों ने मिलकर
बालशेविक का कार्य बना दिया।
क्रान्ति को अनिवार्य बना दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मच्छर

मच्छर खफीफ जानवर है।
मगर, वह खूब जानता है
कि वह शिकारी है।

वह दूसरों का लहू पीता है।
एक जीव दूसरे के रक्त पर जीता है।

मगर, इंसाफ की बात कहनी हो
तो यह कहना चाहिए
कि जितने से पेट भरे,
उतना ही खून वह चखता है।
और आदमियों के बदन से लहू चूसकर
वह बैंक में नहीं रखता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई क्रान्ति शुरू करो

है कोई यहाँ
जो एक क्रान्ति शुरू करे?
रुपया पाने के लिए नहीं,
न उसका मान बढ़ाने के लिए;
बल्कि, हमेशा के लिए
दुनिया से उसका रिवाज़ उठाने के लिए।

है कोई यहाँ
जो एक क्रान्ति शुरू करे?
मज़दूर-वर्ग को गद्दी पर बिठाने को नहीं,
बल्कि, हमेशा के लिए
कमकरों के वर्ग को खत्म करके
आदमियों की
एक नयी दुनिया बसाने के लिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावी राज्य

मनुष्य जब एक-दूसरे को छुएगा,
उँगलियों से पीयूष चुएगा।

लोहा पिघलेगा,
मशीनवाली सभ्यता बह जायगी।
दीखेगा विश्ववाद का नारा
जैसे भोर का टिमटिमाता तारा।

सत्ता का केन्द्रीकरण,
व्यक्ति के स्वत्वों का हरण,
ये सारी प्रक्रियाएँ रुक जायँगी।

एकता अनेकता में अपने को खोजेगी,
सीधी ऊँचाई नहीं,
टेढ़े फैलाव में
धरती भविष्यत् के सपने को खोजेगी।

रंग-बिरंगे छोटे-छोटे देश,
बोलते हुए अपनी-अपनी भाषाएँ,
पहने हुए अपने-अपने वेश,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक ही महफिल में बैठेंगे होकर स्वाधीन,
कोई नहीं किसी की भौं के अधीन।

चितकबरे फूल के दल,
स्पर्श की माधुरी से विह्वल!
भिन्नताएँ बोलेंगी खुलकर,
मगर, एक ही रहेंगी हिल-डुलकर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम

काम करने का कोई अर्थ नहीं
अगर वह अपने भीतर तुम्हें लीन नहीं करता,
जैसे खेल खिलाड़ी को रिझाता है,
उस तरह तल्लीन नहीं करता।

जो काम आदमी को रिझाये नहीं,
उसकी तबियत को बहलाये या मन को भुलाये नहीं,
वह काम कोई काम नहीं है।
उसे छोड़ दो।

जब मनुष्य काम पर हो,
उसे वसन्त-काल के वृक्ष के समान आनन्द पीना चाहिए।
केवल काम करना ही नहीं,
भीतर से प्रफुल्ल होकर जीना चाहिए।

जब श्याम वर्ण के हिन्दू कारीगर
प्यूनी बनाते और कपास धुनते हैं,
या अपने बारीक हाथों से ऊन के कपड़े बुनते हैं,
समाधि में उनकी आत्मा विलीन होती है,
सारी चेतना कारीगरी में लीन होती है;
उन पेड़ों के समान
जो पतले तो हैं, मगर, ध्यान में हैं,
इस धरती पर होते हुए भी आसमान में हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन आनन्द से भरा, एकतान है।
दीपक पर दीपक बल रहे हैं।
पेड़ को अपनी कोई खबर नहीं है,
मगर, पत्तों पर पत्ते निकल रहे हैं।

पत्ते ऐसे, जो चिकने, मुलायम, सफेद हैं;
कुछ लाल भी हैं और कुछ हरे भी;
कई छोटे-छोटे, कई चौड़े और बड़े भी।

जो हाल कपड़ों का है,
वही है मेज़ों, कुर्सियों और दराजों का;
छोटे-छोटे जूतों का,
और बड़े-बड़े जहाजों का।

आदमी अगर अपनी भावना लगाये,
इन चीजों को अगर प्यार से बनाये,
तो जीवन उनके भीतर अपना दोल भरता है,
जैसे पक्षी अपने सीने से दवाकर खोंते को गोल करता है।

जैसे झाड़-झुरमुट बनाये नहीं बनते,
खुद-ब-खुद उभरते हैं,
जैसे पेड़ फूलों को गढ़ते नहीं,
उन्हें उत्पन्न करते हैं।
जैसे सुर्खी-सीमेंट के बिना, अनबनाये ही,
गाँवों में डगर बने थे,
जैसे पुराने ज़माने के
काम-काजू जीवन से,
आपसे आप, नगर बने थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसा पहले था, वैसा ही आगे भी होगा ।
जब आदमी जगेगा, मशीन जरूर टूटेगी ।
और फिर जिस धारा को मशीनों ने रोक रखा है,
वह काल पा कर अवश्य फूटेगी ।

जैसे पेड़ अपने पत्तों के लिबास पहनते हैं,
आदमी भी अपनी ज़िन्दगी की साँसों से
बुना हुआ वस्त्र पहनेगा—
वस्त्र जिनमें उँगली के स्पर्श की पुकार होगी,
मन के सपने होंगे, रूह की झंकार होगी ।
और आदमी के रहने के गेह?
वे हरे-भरे कुंज होंगे ।
जैसे बया अपने घोंसले में बैठकर चहकती है,
आदमी भी बड़ी खुशी से अपने गेह में रहेगा ।
काम करेगा, लेकिन, मग्न ध्यान और स्नेह में रहेगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन के माध्यम

हम माध्यम हैं, जिसके भीतर से
जिन्दगी आगे को चलती है।
हम मानवता के बीज बोते हैं,
हम से नये मनुष्य उत्पन्न होते हैं।

और जब हम जीवन को आगे नहीं बढ़ाते,
जिन्दगी हमसे मुँह मोड़ लेती है;
यानी नदी हमारे भीतर होकर बहना छोड़ देती है।

सेक्स का यह रहस्य पहचानो,
उसे आगे दौड़नेवाला प्रवाह मानो।
जिसका पानी मर गया है,
सेक्सहीन मनुष्य वह डाबर या सोता है।
सेक्सहीन लोगों से जीवन उत्पन्न नहीं होता है।

और काम करते समय भी
जब हम कृतियों में अपने प्राण उँड़ेलते हैं,
हमारा घट रिक्त नहीं होता।
जीवन की धारा दौड़ती हुई आती है,
हमें नयी ज़िन्दगी से भर जाती है।
मन के भीतर नयी उमंग उठती है,
दिन भर ज़िन्दगी की तरंग उठती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मर्द तिपाई गढ़े और औरत आलू छीले,
इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है।
असली बात यह है कि तुम्हारे कामों को
ज़िन्दगी की थरथराहट ने छुआ कि नहीं।
यानी तुम्हारे भीतर जो रस है,
वह तिपाई और आलू में चुआ कि नहीं।

अगर यह रस पड़ा है
तो आलू की सब्जी मज़ेदार होगी,
और सूखे काठ की तिपाई में ज़िन्दगी आशकार होगी।
यह बात पुरानी, मगर, सच है
कि दान देनेवाले को दान वापस मिलता है।
जो मिट्टी में पसीना गेड़ता है,
उसके खेत में गुलाब का फूल खिलता है।

लेकिन, जीवन को दान में बहाना
इतना आसान नहीं है।
जो कमीने और बेवकूफ हैं,
वे जीवन का दान नहीं पायेंगे,
और अगर कोई दानी उन्हें अपनी ज़िन्दगी देता है,
तो उसे ये जीवित मुर्दे बिलकुल चबा जायेंगे।

जीवन देने का अर्थ यह है
कि जहाँ जीवन नहीं है,
वहाँ उसका प्रकाश भरो,
भले ही तुम फटी कमीजें सियो
या रूमाल को साफ करो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यम वर्ग

मध्यम वर्ग के लोग
सूर्यविहीन होते हैं।
कपड़ों से साफ़-सुथरे होने पर भी,
मन से पंगु और दीन होते हैं।

दो ही गज हैं,
जिनसे वे दुनिया को नापते हैं।
एक गज है रुपये का,
दूसरा है भोंड़े जनमत का।

भीतर के प्रकाश से वे
न तो परिचित हैं, न डरते हैं।
सूर्यगुण की तो कभी
बात ही न करते हैं।

जनमत पर तुमने यदि
अपने को छोड़ दिया,
तो यह समझो कि अपना
अस्तित्व तुमने तोड़ दिया।
तव तुम आत्मा के पुरुष नहीं,
मानव न स्वीय हो।
मध्यम-वर्गीय हो।

क्योंकि नीचे अगर लोग नहीं हों
तो मध्यम वर्ग मान कहाँ पायेगा ?
खुद ही लुढ़क कर निम्न-वर्ग बन जायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और ऊपर अगर उच्च वर्ग नहीं हो
तो मध्यम-वर्ग नंबर दो किसका रहेगा ?
क्या तुम समझते हो कि
तब वह तरक्की पा जायेगा
और अपने को अमीर कहेगा ?

फरज़ी की जगह प्यादा होने से रहा।
मध्यम-वर्ग ज़ीरो से ज्यादा होने से रहा।

दो वास्तविकताओं के बीच
एक अवास्तविकता विभाजक बनकर पड़ी है
मध्यम श्रेणी
दोनों का मुँह जोहती खड़ी है।

न तो सूरज है, न धरती है।
एक पर मध्यम श्रेणी का काबू नहीं,
और दूसरे से वह डरती है।

लहू में जोश नहीं, आँखों में प्रभात नहीं।
बुर्जुआपन से आगे कोई बात नहीं।

शकट का चक्का फँसा कीच में है।
मध्यम-वर्ग हर चीज के बीचों-बीच में है।

ताला हाथ में है,
मगर, किवाड़ में न कुण्डी है।
मध्यम वर्ग
दिवालिया बैंक की हुण्डी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुपये का पागलपन

कारण जानते हो हमारे पागलपन
—हमारे सामाजिक पागलपन का ?
रुपये ने आदमी को पागल कर दिया है ।
चारों ओर जिसे देखते हो,
उन्माद है वह धन का ।

और जब समूह ही पागल हो,
तो व्यक्ति और क्या करेगा ?
कैसे नहीं अपने हिस्से के पागलपन को
वह जतन से सहेज कर धरेगा ?

धनवान जब दस रुपयों के नोट देते हैं,
भीतर बड़ा ही कष्ट पाते हैं ।
और सौ रुपयों के नोट बढ़ाते समय तो
बड़े-बड़े सेठ काँप जाते हैं ।

हम जो गरीब या अमीर हैं,
रुपयों के सामने झुक जाते हैं ।
और इसमें कोई आश्चर्य नहीं ।
क्योंकि लोभ का स्वभाव ही चपल है ।
और रुपये में भयानकता है, निर्दयता है ;
दूसरों को तोड़ने का बल है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन, जिस चीज़ से हम डरते हैं,
वह न तो रुपया है, न धन है।
भय की असली बात
मनुष्य-जाति का सामूहिक पागलपन है।

क्योंकि मनुष्य-जाति और पूछती क्या है?
सिवा इसके कि "तुम्हारे पास कितना रुपया है?"
और अगर रुपया नहीं है,
तो जाओ, अपनी राह धरो।
धूल फाँको
और जाड़े से ठिठुर कर मरो।

जिसके पास रुपये नहीं हैं,
समाज उसे भी कभी-कभी
रोटी खिला देता है।
लेकिन, आटे में जरूर
वह धूल मिला देता है।

और धूल-मिली रोटी अगर खाये नहीं,
जान अगर अपनी बचाये नहीं,
तो बिना पैसे का आदमी
और क्या करे?
इज्जत की बात सोचे
तो बेमौत मरे।

यही है खौफ
जो मुझे डराता है।

6

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुक्र है कि यह भय
सन्निपात नहीं बन जाता है।

नीचे मनुष्यता मसोस रही मन है।
छाती पर चाँदी की बूट पहने
शान से खड़ा रुपया और धन है।
और यही रिवाज हमें अच्छा लगता है।
सोचो तो, कैसा पागलपन है!

हर आदमी को पैसा चाहिए
कि वह मरे नहीं, बचे।
खेतों में फसल उगाये
या चाँद को देखे और कविता रचे।

अगर पैसा इतना जरूरी है
तो आसमान से वह क्यों नहीं बरसता है?
हवा के साथ वह झरता क्यों नहीं?
आदमी क्यों इस तरह पैसों को तरसता है?

नहीं, ये बातें बिलकुल गलत हैं।
रोटी मुफ्त होनी चाहिए,
मुफ्त होना चाहिए घर भी।
जैसे पानी और हवा मुफ्त हैं,
वैसे ही मुफ्त होना चाहिए बस्तर भी।

और यह केवल
कुछ लोगों के लिए नहीं,
बल्कि, सब के लिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल पटने में नहीं,
अथवा दिल्ली या हिसार में,
एक-दो देशों में नहीं,
बल्कि, सारे संसार में।

पूर्व इसके कि तुम रुपये के लिए मरो
या मरने पर औरों को मजबूर करो,
जरूरी यह है
कि रुपये के पागलपन को दूर करो।

पागलपन हट गया,
तो नाश टल सकता है।
सच तो यह है
कि रुपये के बिना भी समाज चल सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकार और मजदूर

मौसी, मौसी, मुझे रोको, मेरा हाथ थामो,
नहीं तो मैं किसी का बुरा हाल करूँगा।
मेरे दर्द को समझो, मुझे बढ़ के सँभालो,
नहीं तो मैं हड़ताल करूँगा।

मैं इतना बेचैन हूँ
और तू समझती ही नहीं ?
मैं इतनी देर से चीख रहा हूँ
और तू कोई बात कहती ही नहीं ?

मौसी, मेरा हाथ थामो,
मैं तुम्हारा छोटा बच्चा हूँ,
मुझे प्यार करो।

हम प्रेम पाना चाहते हैं,
खास कर हम जिनसे
काम तुम कम नहीं लेती हो।
मगर, बदले में न तो पीठ पोंछती हो,
न काफी रोटी और दूध देती हो।

मजदूरी घटती है,
और हम तकलीफ पाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब भी रोटी से ज्यादा
हम तुम्हारे प्रेम के लिए ललचाते हैं।

मौसी हमें प्यार करती है,
अगर इतना हमें ज्ञान रहे,
तो सच कहता हूँ,
फाकाकशी में भी काफी इतमीनान रहे।

और अब तो तालेबन्दी का रिवाज़ चला है ;
कारखाने बन्द हो जाते हैं।
हमें हाथ पर हाथ धर कर रोना पड़ता है।
घर में चूल्हे नहीं जलते।
और बच्चे अपनी माँ से पूछते हैं,
कि बाबूजी बैठे क्यों हैं ?
वे काम पर क्यों नहीं जाते हैं ?

मौसी, मौसी, कुछ उपाय बताओ,
इन बच्चों को मैं क्या जवाब दूँ ?
अगर अपना कलेजा फाड़ूँ
तो बाप के मरते ही ये बच्चे नहीं जियेंगे।
तो पत्तल पर सेठों की अकड़ परोसूँ ?
या इन्हें खाने को
तुम्हारी योजनाओं का ख्वाब दूँ ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मशीन की कामयाबी

लोग मशीन की कामयाबी की बात करते हैं,
लेकिन, यह कामयाबी टिकेगी नहीं।
इंसान, लाचारी से, उसका पुर्जा बन गया है।
मगर, इंसानियत, हमेशा के लिए, बिकेगी नहीं।

हज़ारों-हज़ारों सदियों से
आदमी आदमी रहा था।
झाड़-झंखाड़ काट कर उसने राह बनायी थी
और सूर्य की ओर मुँह खोलनेवाले
फूलों से, चुप-चुप, अपना दर्द कहा था।

मशीन तो महज़ एक गमगीन
सदी की घटना है।

मगर, एक ही सदी में
उसने ऐसी हलचल मचायी
कि हर चीज़ गड़बड़ हो गयी;
और आदमी के धागे टूट गये।
जिस पेड़ पर लवा ने
अपना घोंसला बनाया था,
उसे मशीन ने इस तरह झंझोड़ा
कि घोंसला भी गिरा और अंडे भी फूट गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाँ दलदल और पानी था,
भूचाल से वहाँ की भी जमीन काँपने लगी।
फिर क्या था?
जितने भी हंस थे, घबरा के उड़े, भाग गये।
और आदमी ने यह भी नहीं देखा
कि यहाँ हंस रहते थे;
गरचे, वे गाते-गाते
हमारे मरण का राग गये।

मशीनें घहराती हैं तो उन्हें घहराने दो।
मगर, कुछ हृदय हैं,
जिनके भीतर यंत्र का चक्र नहीं चलेगा।
धर्म अभी भी बाँझ नहीं हुआ है।
काल पाकर यह वृक्ष अवश्य फलेगा।

ऐसे हृदय अभी हैं
जिनके भीतर हंसों के लायक
खाँच हैं, सरोवर हैं, सोते हैं।
जिनके बसेरे मशीनों ने उजाड़ दिये हैं,
उन शरणार्थी पक्षियों के खोंते हैं।
गायें रँभाती हैं, बैल और साँड़ हुँकारते हैं।
नन्हीं-पतली घासों का चारागाह है,
जहाँ मृग-शावक चौकरी भरते हैं।

ये जीव मरेंगे नहीं, जीवित रहेंगे।
और जब वे दबते-दबते
आत्मा की दीवार से सट जायेंगे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निराशा की अति से अधीर हो कर
अपना दर्द काफी जोर से कहेंगे।

आसमान पर गानेवाली लवा
आखिर शून्य में कब तक चीखेगी ?
एक दिन वह चीखती-चिल्लाती
धरती पर गिरेगी
और आकाश से आती हुई
खंड-प्रलय की उल्का-सी दीखेगी।

और हंस पानी में जोरों से पंख फड़फड़ायेगा ;
इतने जोर से कि आदमी घबरा जायेगा।
और भेंड़ें फण उठाये साँपों की तरह
अपनी गरदनें तानेंगी,
जो आदमी मशीन का पुर्जा बन गया है,
उसे रूह का दुश्मन मानेंगी।

और देवदार के सीधे पेड़
इस तरह हिलेंगे
मानो, भीतर कोई आग जल रही हो ;
मानो, पत्तों से गर्म शीशे चनक रहे हों
या आग की चिनगारी निकल रही हो।

चाँदनी की चीत्कार, फूलों के रोष और शबनम के कोह से,
अपनी आत्मा के इन सगोत्रियों के विद्रोह से
आदमी परीशान होगा, हारेगा।
आखिर, अपने आप को वह कहाँ तक मारेगा ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तरतम के इस विद्रोह को कौन दबायेगा ?
क्या इंजन आत्मा की उस गहराई तक जायेगा,
जहाँ खाँच है, सरोवर है, कन्दरा है, खोह है,
हंसों, शावकों और पक्षियों ने जहाँ आश्रय बनाये हैं,
और मशीनों के खिलाफ जहाँ विप्लव-विद्रोह है ?

यंत्रों की शक्तियों पर भूला हुआ आदमी,
कल-पुर्जों की ताकत पर फूला हुआ आदमी,
रूह की बगावत को सँभाल नहीं पायेगा।
घबराहट और परीशानी से वह पागल हो जायेगा।

और तब यह होगा
कि मशीनें आपस में ही लड़ेंगी।
एक दूसरी से टकरायेंगी और युद्ध करेंगी।
और फिर कारखानों से निकल
इंजन दौड़ेंगे आदमी के घर पर।
जीव-जन्तुओं पर धावा बोलेंगे
सींग ताने हुए टूटेंगे नारी और नर पर।

यंत्र के पुतले अकारण संग्राम करेंगे।
आदमियों के साथ देवता भी मरेंगे।

बिजली चमकेगी और बज्र बरसेंगे।
देख लेना, कैसा घमासान होगा।
जहाँ आज शहर और नगर बसे हैं,
वहाँ रोती हुई वायु बहेगी ;
वहाँ सूने मरघट होंगे, निर्जन श्मशान होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और तब मरघट के पार से,
जहाँ मशीनें नहीं पहुँची हैं,
उस अछूते संसार से
हंस फिर गरदन उठाये हुए आयेंगे,
नये सूर्य की ओर मुँह करके
कूजेंगे, मँडरायेंगे।

पक्षी अमृत का दान करेंगे,
आकाश में उड़ कर मीठे सुरों में गान करेंगे।
बिना लिखी-पढ़ी हवाएँ प्रदाह हरेंगी।
गायें बछड़ों को दूध पिलायेंगी।
भेंड़ें निश्चिन्त हो कर चरेंगी।

लेकिन, धरती के केन्द्र में होंगे धुएँ
लौह-युग के ध्वंस के, बर्बादी के;
जिसे हम मशीन कह कर पूजते हैं,
उसकी कामयाबी के।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथ की कारीगरी

आदमी जो चीज बनाता है,
वह जीवित होती है।
जीवित होती है
क्योंकि उसमें जीवन आ गया है।
आदमी ने उसे प्यार से छुआ है।
आदमी उसमें खुद समा गया है।

हिन्दुस्तान की एक गज मसलिन को देखो,
कितनी सजीव है!
कितनी महीन और मुलायम है!
जिन हाथों ने इसे बुना है,
उनकी खुशबू इसके सूत-सूत में कायम है।

और "नवाजो"—औरतें
जब ऊन धुनती हैं,
या अपने सपनों के नक्शे पर
कोई कंबल बुनती हैं,
तो कंबल उनके सपनों का चित्र बन जाता है।
उनकी आत्मा के समान
कोमल और पवित्र बन जाता है।

हाथ की कारीगरी में कोई संजीवनी है,
जो कारीगर को थकने नहीं देती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बल्कि, उसके भीतर नयी उमंग भरती है।
और काम ज्यों-ज्यों
आगे बढ़ता है,
वस्त्र के धागे-धागे में
आत्मा किलोल करती है।

हाथ की कारीगरी की खुसूसियत यह है
कि कारीगर के गुजर जाने पर भी
उसकी चीजों में जान बाकी है।
साँप सरक कर निकल चुका है,
मगर, बालू पर उसका निशान बाकी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाप से भागो

कुछ लोग उठें और पाप से भागें,
नहीं तो सब नष्ट होनेवाला है।
समय आ गया है कि हम जागें,
नहीं तो हालत ठीक नहीं रहेगी।
ठीक है कि दुनिया ने, घूमते-घामते,
एक रास्ता पकड़ लिया है,
लेकिन, बहुत शीघ्र यह लीक नहीं रहेगी।

अनेक लोगों में जो पापमय विचार भरे हैं,
उनके कारण
दुनिया की रूह गुनहगार हो गयी है
हमने जो छुरी
अपने दुश्मन के लिए गढ़ी थी,
वह देवता के हृदय के आर-पार हो गयी है।

रहम से ज़माने का दिल बिलकुल खाली है,
लगता है, दुनिया राख बननेवाली है।

पाप कहाँ-कहाँ छिपा है,
गिनाऊँ क्या?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके रहने की जगहें तुम्हें
दिखाऊँ क्या ?

रुपये कमाने की आकुलता
पाप है।
हर औरत के पीछे भागने की व्याकुलता
पाप है।
यंत्र का चक्र घूम कर पाप करता है।
और मशीनें जब आदमी पर दौड़ती हैं,
पाप जीता और पुण्य मरता है।

पाप है ज्ञान को अमूर्त बनाना,
अर्थ-पद्धति को उस तरह समझाना
जिसे समझता तो कोई नहीं,
लेकिन, सब मानते हैं।
बिना समझे-बूझे
उसकी महिमा बखानते हैं।

विज्ञान का अमूर्त्तीकरण पाप है।
शिक्षा में से
मानवीयता का हरण पाप है।

'जाजा'-संगीत, सिनेमा और रेडियो,
यह सब जीवन का अमूर्त्तीकरण है;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और राजनीति तो, प्रत्यक्ष ही,
मनुष्य की ऋजुता का हरण है।

पाप ने हमें गरस लिया है।
पाप हम पर छा गया है।
कुछ लोग उठें
और पाप को चुनौती भेजें,
मेरे जानते, समय वह आ गया है।

उठो, और कोई द्वीप बसाओ,
या कोई बड़ा-सा किला बनवाओ
जिसकी दीवारों को पाप नहीं तोड़ सके,
कोशिश करने पर भी, सेंध नहीं फोड़ सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनाश

जिस सभ्यता में हम जी रहे हैं,
लगता है, वह मरनेवाली है,
हमने प्रकृति की बात नहीं मानी,
नियति अब हमारे साथ इंसाफ करनेवाली है।

यह सभ्यता सामाजिक पागलपन से मरेगी।
छुरी निकाल कर उछलेगी
और नरमेध करेगी।

होशहवास के मानी यह हैं
कि हमारी चेतनता अखंड और पूरी हो।
लेकिन, समाज तो उस पगले के समान है,
जिसकी चेतना खंडित और अधूरी हो।

अगर अपनी चेतना के सभी दरवाजे
हम मुक्त नहीं करेंगे,
जहाँ हमारा दम घुटता है,
उस कोठरी में ताज़गी नहीं भरेंगे,
तो हमारे बिना-खिड़कियों-वाले स्वर्ग की
गगन-नील दीवारों पर
लहू के लाल-लाल छींटे उड़ेंगे।
और हमारी लाशों पर भोज मनाने के लिए
भेड़िये और शृगाल आ जुड़ेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चूज़ा

मैं चूज़ा हूँ, चूज़ा, करता हूँ चियाँ-चियाँ,
मेरा नाम है अब्दुल शर्मा, उपनाम है हुलास मियाँ।
न तो कविता लिखता हूँ, न रंगों से लीक भरता हूँ,
मैं सिर्फ लिखने वालों को ठीक करता हूँ।
जो भी लोग लिखते या तसवीर बनाते हैं,
मेरे कोप के सामने बिलकुल काँप ज़ाते हैं।
क्योंकि मैं चूज़ा हूँ, करता हूँ चियाँ-चियाँ,
मेरा नाम है अब्दुल शर्मा, उपनाम है हुलास मियाँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झाँकी

उस मर्द के मर्द होने से क्या,
जिसके भीतर देवत्व की झाँकी नहीं हो ?

और यही बात हम औरत से भी कहेंगे
अगर उसके मुख पर
किसी देवी की प्रभा आँकी नहीं हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहब्बत की खोज

जो लोग कमर कस कर
प्रेम की खोज में निकले हैं,
जान लो कि वे पूरे प्रेमहीन हैं।

ओदी लकड़ी, जो जलती नहीं।
कोई ऐसी लता,
जो, कोशिशों के बाद भी, फलती नहीं।

बाँस का लंबा पेड़,
जिसमें फूल नहीं खिलता है।
जो प्रेमहीन है,
उसे प्रेम कहीं नहीं मिलता है।

लेकिन, जो स्वयं प्रेमी हैं,
वे प्रेम हर जगह पाते हैं।
और ऐसे लोग
प्रेम की खोज में कहीं नहीं जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असबाब

कुछ औरतें जीती हैं
घर में ठसे, बेवकूफ असबाबों के लिए ;
कुछ मर्द जीते हैं
दिमागी असबाब
यानी फूले हुए ख्वाबों के लिए।

और कुछ ऐसे भी हैं
जो असबाब भावनाओं के सजाते हैं,
मन जहाँ लटक गया है,
उस खूँटी की बात करने में शरमाते हैं।

और इन सब का एक ही मानी है।
यानी इनकी ज़िन्दगी
असबाबों की कहानी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्लीलता

शरीर तो अपने आप में पवित्र है।
गन्दा है तो वह दिमाग का नाला है,
जो आदमी के भीतर बहता है।
मन के कारण शरीर पाप सहता है।

सेक्स को पाप मत कहो।
वह नर और नारी के बीच बहने वाला
भावों का बड़ा ही कोमल प्रवाह है।

पापी वह है जो इस प्रवाह को चोट पहुँचाता है;
इसे गदला बनाता, स्वाभाविकता से दूर करता है।
पापी मन है,
जो शरीर को जबर्दस्ती मजबूर करता है।

मन को बाँधे रहो तो शरीर स्वच्छ रहेगा,
काम का प्रकाश निर्धूम और प्रत्यक्ष रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल इतना

औरत से मैं केवल इतना चाहता हूँ
कि जब मेरा हृदय उसकी ओर झुके,
उसे प्यार करे,
वह सुशील रहे,
मेरे प्रति भलमनसाहत का व्यवहार करे।

और हम दोनों के बीच का कंपन
ऐसा हो, जिसे सुनता हो केवल मन;
झिलमिल चाँदनी में लिपटा हुआ राज़;
उस घण्टी की-सी महीन आवाज़,
जो बजने पर भी सुनायी नहीं देती है;
रक्त के भीतर चलने वाली नाव
जो बाहर से दिखायी नहीं देती है।
बस, औरत से मैं इतना ही चाहता हूँ।

क्योंकि मैं उन हिंसा-भरी नारियों से परीशान हूँ
जो हाव-भाव के बाणों पर बाण फेंकती
और लड़ती हैं,
जबर्दस्ती प्रेम किये जाने की ज़िद करती हैं।
जब कि प्रेम से वे बिलकुल रीती हैं,
केवल प्रेम किये जाने के लिए जीती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेक्स और विश्वास

सेक्स चाहते हो,
तो दूर मन से हर तरह का त्रास करो ;
जो जीव तुमसे मिलने आया है,
उसका, सच्चे हृदय से, विश्वास करो।

पारस और पत्थर के बीच
अगर एक कागज भी आ पड़े
तो पत्थर सोना हो ही नहीं सकेगा।
आदमी केवल शरीर के बल पर
अपनी चेतना खो ही नहीं सकेगा।

और तुम अगर डूबे नहीं ;
चेतना प्रबुद्ध रही,
तो यह समझो कि काम की सारी क्रिया अशुद्ध रही।

काम की चेतना केवल प्यास नहीं है।
वह आत्मा का संपूर्ण अवगाहन,
मन की एकायन वृत्ति खोजती है।

लेकिन, डूबने की हिम्मत वह कहाँ से लायेगा
जो अगाधता से डरता है,
जिसे सरोवर के जल का विश्वास नहीं है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम के बारे में झूठी बातें

हम सब के सब झूठे हैं,
क्योंकि हम जानते ही नहीं
कि कौन-सी बात गलत,
और कौन सही है।
मसलन, कल जो बात सत्य थी,
उसका रूप बदल गया है
और आज वह उतनी सत्य नहीं है।

मगर, अक्षरों का तो रूप ही निर्धारित है;
वे रोज़-रोज़ नहीं बदलते हैं।
इसीलिए, हम अर्थ को भूल
केवल अक्षरों के सहारे चलते हैं।

क्या प्रेम हमारा इस वर्ष भी वही है
जिसकी अनुभूति पिछले वर्ष हुई थी?
वही उतावलापन, वही ताज़गी और बेचैनी,
जिसका पिछले साल हमें भान था?
सच तो यह है
कि इस साल प्रेम कुछ बूढ़ा हो चला है,
जब कि पिछले साल वह पूरा नौजवान था।

हमारे सारे भाव
घड़ी-घड़ी बदलते रहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मगर, भाषा में इतने शब्द कहाँ हैं
कि हम हर हालत को
एक नया नाम दे सकें?
इसलिए, प्रेम को, हमेशा,
हम प्रेम ही कहते हैं।

मानो, प्रेम कोई पत्थर हो,
फूल नहीं,
जो एक बार खिल कर
मुरझा जाता है;
और उसकी जगह पर
वैसा ही कोई और फूल आता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझ से भी कहा था

उसन मुझसे भी कहा था,
"तुम इतना क्यों शरमाते हो?
छाती के पास अगर बटन खुले हैं,
तो उन्हें खुला रहने दो।
मुझे देखते ही
यह बटन तुम क्यों लगाते हो?

"वह तुम पर खूब सुहानी लगती है,
कमीज़ से झाँकती जो बालों की कतार है।
यह अच्छा है कि तुम्हारे पाँव कड़े लगते हैं,
चेहरा कुछ रूखा, लेकिन, रोबदार है।

"मगर, तुम बुद्धू हो,
क्योंकि तुम्हें लाज लगती है।
सभी मर्द बुद्धू होते हैं,
क्योंकि यह कँपकँपी हर एक में जगती है।

"सभी जीवों के बीच
लाज मर्दों के हिस्से पड़ी थी।
शायद, इसलिए
कि उस समय वहाँ कोई औरत खड़ी थी।
इसी से, औरतों को देखते ही
मर्द घबराता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने कपड़े-लत्ते ठीक करके
अदब से बैठ जाता है।

"मगर, जब तुम घबराते हो,
मुझे हँसी नहीं आती,
प्यार आता है।

"कनखियों से ही सही,
मगर, कुछ और देख लूँ,
ऐसा ख्याल बार-बार आता है।

"भगवान ने तुम्हें अपने हाथों से गढ़ा था।
और तुम में जीवन फूंकते समय
जो मंत्र पढ़ा था,
वह आज भी तुम्हारे स्वर में
प्रत्यक्ष गूँजता है।
और नहीं तो संसार तुम्हें क्यों पूजता है?
तुम्हारी आवाज़ सुनने को
दुनिया उमड़ कर क्यों आती है?
और, खास कर, नारियाँ
तुम पर क्यों बलि जाती हैं?

"जो तुम्हें बुरी नजर से देखे,
उसकी आँखों में आग पड़े।
तुम्हारा बाल नहाते समय भी न टूटे,
न तुम्हारे पाँव में कंकड़ी का दाग पड़े।

"आह! तुम खूबसूरत हो,
खुशमिज़ाज़ और प्यारे भी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारी दुनिया तुम्हें अपना समझती है।
हम समझती हैं, हो हमारे भी।"

और इतना कह कर,
उसने मेरे कंधे पर
अपना हाथ धर दिया।

हाथ क्या रखा?
मेरे भीतर
कोई नशा-सा भर दिया।

मैं सोचने लगा,
"अजीब बात!
क्या इतना अंधा और उतावला
स्नेह हो सकता है?
क्या मुझ में कोई ऐसी बात नहीं है,
जिस पर इसे संदेह हो सकता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तित्व

चाहे जितनी बातें हो जायँ,
मगर, तुम तुम रहती हो
और मैं मैं रहता हूँ।

मन-ही-मन सोचता हूँ,
यह भी कैसी मजबूरी है!
सारी दूरियाँ खत्म हो चुकीं,
मगर, तब भी कहीं शेष एक दूरी है।

फिर भी, कोई गम नहीं है।
यह आनन्द कुछ कम नहीं है
कि मेरा पावक
तुम्हें ठीक से समेट नहीं पाता है।
बाँहें खूब बढ़ाने पर भी,
तुम्हारा कोई रूप बाँहों से बाहर रह जाता है।

वह कौन-सी चीज़ है,
जो हाथ नहीं आती है?
तुम्हारे भीतर यह कौन है,
जो मुझे छूकर भाग जाती है?

मगर, मैं हार मानने वाला नहीं हूँ।
आखिरी दम तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं इस छाया की इन्तज़ारी करूँगा।
और मरते-मरते उसे अंक अवश्य भरूँगा।

तुम बूढ़ी भले ही हो जाओ,
मगर, मैं तुम्हारी राह देखता रहूँगा।
और हमेशा यही कहूँगा
कि तुम नयी की नयी हो
और मैं जवान हूँ।
तुम्हारे नज़दीक रहता हूँ,
इसलिए, भाग्यवान हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खास दोस्त

"तुम्हें मेरे प्रेम की परवाह नहीं है?"
उसने जरा जोर से कहा।
मैं कुछ घबरा-सा गया
और दम भर खामोश रहा।

लेकिन, तुरंत मैंने एक आईना बढ़ाया
यह कहते हुए
कि ऐसे सवाल का जवाब देनेवाला
मैं कौन हूँ, तुम्हारे रहते हुए?

जब सवाल जज्बाती हों,
हरगिज नहीं खासो-आम से पूछो।
ऐसे सवाल बराबर
सदर मुकाम से पूछो।

और ऐसा कहकर मैंने उसे
अकचकाहट से भर दिया।
और आईना सीधे
उसके हाथ में धर दिया।

वह गुस्से में ऐसी बौखलायी
कि पाती तो मेरी गरदन ही मरोड़ देती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कुछ नहीं मिलता
तो शीशे को मेरे माथे पर फोड़ देती।

लेकिन, शुक्र कि आईना देखते ही
वह मन-ही-मन फूल गयी।
चेहरा सामने आया
और दम भर को रंज भूल गयी।

इतने में मेरा होश-हवास जागा।
और सिर पर पाँव रख कर
मैं जोर से भागा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हँसो और बोलो

खुल कर करो बात ; हँसो और बोलो।
आपस में जी भर कर हृदय जरूर खोलो।
मर्दो और औरतो !
चुहलें मचाओ और शाद रहो ;
बातों में नकली परहेज़ से आज़ाद रहो।

मगर, यह मत भूलो
कि यह दोस्ती तन नहीं, मन की है।
हाथ-पाँव की नहीं,
बौद्धिक जीवन की है।
इसे स्पर्श अधीर तक नहीं जाना चाहिए।
यानी इस दोस्ती को
शरीर तक नहीं जाना चाहिए।

जब तक तुम शरीर से अलग हो,
तभी तक इस दोस्ती का मज़ा है।
हाथ परहेज़ में हों,
तभी तक बात करना बजा है।

लेकिन, कहीं बुद्धि की दोस्ती
बदन पर आ गयी,
तो समझो कि सब घुटाला हुआ।
हमार संबंध का मुँह काला हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्याधर स्मृति संग्रह
04304
पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

नहीं मिस्टर लारेन्स, नहीं

नहीं मिस्टर लारेन्स! नहीं।
बात ठीक वैसी नहीं है,
जैसा आप फरमाते हैं।
प्रेम के बारे में दो-एक बातें
मैं भी जानता हूँ।
और बुरा न मानें
तो कह सकता हूँ
कि प्रेम को मैं आपसे
कुछ ज्यादा पहचानता हूँ।

R84.01,DIN-A
04304

जो कुछ मैंने समझा है,
वह यह है
कि प्रेम को आप बहुत अधिक
खूबसूरत बताते हैं।
आपको खुद मालूम है
कि कुछ बातें हैं,
जिन्हें आप छिपाते हैं।

मसलन,
इसकी लहर मज़ा देती है
एक से अधिक बार नहीं,
इसलिए, प्रेम एकरस होता है,
बराबर मज़ेदार नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar